प्रारंभिक परीक्षा

फाइव आइज़ एलायंस(Five Eyes Alliance)

संदर्भ

हाल ही में फाइव आईज एलायंस देशों के खुफिया प्रमुखों ने राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय द्वारा आयोजित सुरक्षा सम्मेलन में भाग लिया।

फाइव आईज अलायंस (FVEY) के बारे में -

- **यह एक खुफिया जानकारी साझा करने वाला नेटवर्क है जिसमें 5 अंग्रेजी-भाषी देश शामिल हैं।**
  - **सदस्य**: संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड।
- इसकी स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुई थी, इसकी जड़ें 1946 में हस्ताक्षरित UKUSA समझौते से जुड़ी हैं, जिसका **उद्देश्य इन देशों के बीच सिग्नल इंटेलिजेंस (SIGINT) में सहयोग को सुविधाजनक बनाना** था।

फाइव आईज एलायंस के उद्देश्य -

- **खुफिया जानकारी साझा करना:** इसका प्राथमिक उद्देश्य आतंकवाद, साइबर अपराध और अन्य सुरक्षा चुनौतियों सहित वैश्विक खतरों पर खुफिया जानकारी एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना और उसे साझा करना है।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा संवर्धन:** संसाधनों और खुफिया जानकारी को एकत्रित करके, फाइव आईज राष्ट्रों का लक्ष्य अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा क्षमताओं को मजबूत करना और उभरते खतरों का अधिक प्रभावी ढंग से जवाब देना है।
- **सिग्नल इंटेलिजेंस (SIGINT):** FVEY मुख्य रूप से SIGINT पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक संचार को रोकना और उसका विश्लेषण करना शामिल है। इसमें फ़ोन कॉल, ईमेल और इंटरनेट गतिविधियों की निगरानी करना शामिल है।

तथ्य

- फाइव आईज के मुख्य सदस्यों के अलावा, विस्तारित समूह भी हैं जिन्हें निम्नलिखित नाम से जाना जाता है:
  - **नाइन आइज़** (डेनमार्क, फ्रांस, नीदरलैंड और नॉर्वे को शामिल करते हुए)
  - **फोर्टीन आइज़** (जर्मनी, बेल्जियम, इटली, स्पेन और स्वीडन सहित), जो वैश्विक निगरानी क्षमताओं को बढ़ाती हैं।

स्रोत: The Hindu - 5 Eyes

वायु प्रदूषण से भारत की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता कम होगी

संदर्भ

आईआईटी दिल्ली के शोधकर्ताओं द्वारा हाल ही में किए गए एक अध्ययन में पाया गया है कि **वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन भारत में सौर पैनलों की दक्षता को ख़राब कर देंगे।**

जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण सौर ऊर्जा को कैसे प्रभावित करते हैं -

- **ग्लोबल डिमिंग एंड ब्राइटनिंग:**
  - वायु प्रदूषण पृथ्वी की सतह तक पहुँचने वाले सौर विकिरण को कम करता है, जिससे सौर पैनल की दक्षता प्रभावित होती है।
  - समय के साथ, वायुमंडलीय स्थितियों में परिवर्तन के कारण सौर विकिरण में महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं।
  - इन बदलावों को **ग्लोबल डिमिंग (सतह तक पहुँचने वाला कम विकिरण) और ग्लोबल ब्राइटनिंग (सतह तक पहुँचने वाला अधिक विकिरण)** के रूप में जाना जाता है।
- **वायुमंडलीय घटकों की भूमिका:**
  - **बादल आने वाले सौर विकिरण को परावर्तित करते हैं, जिससे सौर पैनलों के लिए उपलब्ध सूर्य का प्रकाश कम हो जाता है।**
  - एरोसोल और पार्टिकुलेट मैटर (**PM**2.5**, PM**10) या तो सूर्य के प्रकाश को बिखेर देते हैं या अवशोषित कर लेते हैं**,** जिससे विकिरण और कम हो जाता है।
  - जलवाष्प और ओजोन सतह तक पहुँचने वाली सौर ऊर्जा की मात्रा को प्रभावित करते हैं।
  - बादल या धुंधले दिनों में**,** पार्टिकुलेट मैटर प्रदूषण सौर पैनल आउटपुट को काफी कम कर देता है।

सौर पैनल के प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कारक -

- **उच्च सौर विकिरण** - प्रत्यक्ष और तेज सूर्यप्रकाश ऊर्जा रूपांतरण दक्षता में सुधार करता है।
- **कम परिवेश तापमान** - ठंडा वातावरण पैनल की कार्यक्षमता को बढ़ाता है।
- **पैनलों पर वायु प्रवाह** - पैनलों को ठंडा रखने और दक्षता बनाए रखने में मदद करता है।
- इन कारकों में कोई भी असंतुलन सौर सेल के प्रदर्शन को कम कर देता है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष -

- **सौर पैनल दक्षता में अनुमानित गिरावट:**
  - सदी के मध्य तक (2041-2050)**,** भारत की सौर पैनल दक्षता में 2.3% की गिरावट आएगी।
  - कम दक्षता के कारण कुल अनुमानित ऊर्जा हानि प्रति वर्ष 840 गीगावाट-घंटे (**GWh)** है।
- **तापमान वृद्धि का प्रभाव:**
  - उच्च परिवेशीय तापमान के कारण **2050 तक सौर सेल का तापमान 2°C बढ़ जाएगा।**
    - परिवेश तापमान से तात्पर्य आसपास की हवा के तापमान से है।
- **सौर क्षमता में क्षेत्रीय विविधताएँ:**
  - **भारत के पूर्वोत्तर और केरल में भविष्य में सौर ऊर्जा की क्षमता में वृद्धि होगी।**
  - **कारण:** इन क्षेत्रों में बादलों का आवरण कम होने की संभावना है, जिससे पैनलों तक अधिक सौर विकिरण पहुंच सकेगा।

भारत की सौर ऊर्जा महत्वाकांक्षाएं -

- **भारत वर्तमान में विश्व का पांचवां सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक देश है।**
  - **वर्तमान में भारत की कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता 100.33 गीगावाट तक पहुँच गयी है।**
  - **शीर्ष सौर ऊर्जा उत्पादक राज्य:** (1) राजस्थान (2) गुजरात (3) कर्नाटक
- इसका **लक्ष्य 2030 तक अपनी 50% बिजली गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से उत्पन्न करना है**।
- इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, भारत ने 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा है, जिसमें से पांचवां हिस्सा सौर ऊर्जा से आने की उम्मीद है।

स्रोत: **The Hindu - Air Pollution**

सिखना ज्वालाओ राष्ट्रीय उद्यान

संदर्भ

हाल ही में **सिखना ज्वालाओ राष्ट्रीय उद्यान को असम का आठवां राष्ट्रीय उद्यान** घोषित किया गया है।

सिखना जव्वालाओ राष्ट्रीय उद्यान के बारे में -

- **स्थान:** चिरांग और कोकराझार जिले, बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (BTR)।
  - **यह भारत-भूटान सीमा पर स्थित है और चिरांग और मानस रिजर्व वन का हिस्सा है।**
- **प्रमुख नदियाँ**: सरलभंगा, सामुखा, चम्पाबती, भूर, लाओपानी, ढोलपानी।
- **वनस्पति:**
  - **12 प्रकार के वन**, जिनमें आर्द्र साल वन, सदाबहार वन, नदी तटीय वन, सवाना और खैर-सिस्सू वन शामिल हैं।
- **जीव-जंतु:**
  - **लुप्तप्राय गोल्डन लंगूर का प्रमुख जनसंख्या केंद्र। यह भारत और भूटान के चुनिंदा भागों में ही पाया जाता है।**
  - **अन्य वन्यजीव**: हाथी, बाघ, तेंदुए, चित्तीदार हिरण, हॉग हिरण, जंगली सूअर, बाइसन, जंगली भैंस, मॉनिटर छिपकली, अजगर, साही, कछुए और विभिन्न पक्षी।
- **पारिस्थितिक भूमिका:**
  - **हाथी गलियारा: चिरांग-रिपु हाथी रिजर्व** का हिस्सा (2003 में MIKE साइट घोषित)।
  - मानस और रायमोना राष्ट्रीय उद्यानों को जोड़ने वाला वन्यजीव गलियारा।

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व -

- **इसका नाम सिखना ज्वालाओ के नाम पर रखा गया है, जो एक सम्मानित बोडो योद्धा थे।**
- **सिखना ज्वालाओ ने 1866-68 में भूटान और अंग्रेजों के बीच लड़ाई लड़ी थी।**
- उनकी राजधानी सिखानाझार उल्टापानी रिजर्व वन में थी, जो अब राष्ट्रीय उद्यान के अंदर है।
- बाथौ खेराई पूजा, एक प्रमुख बोडो धार्मिक त्योहार, यहाँ प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

असम के राष्ट्रीय उद्यान (कालानुक्रमिक क्रम) -

- **काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान – (1974 में घोषित) (असम का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान)**
- **मानस राष्ट्रीय उद्यान** – (1990 में घोषित)।
- **नामेरी राष्ट्रीय उद्यान** – (1998 में घोषित)।
- **डिब्रू सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान** – (1999 में घोषित)।
- **ओरंग राष्ट्रीय उद्यान - (1999 में घोषित) (असम का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान)**
- **देहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान** – (2020 में घोषित)।
- **रायमोना राष्ट्रीय उद्यान** – (2021 में घोषित)।
- **सिखना जव्वालाओ राष्ट्रीय उद्यान - (2025 में घोषित)।**

स्रोत: **ETV- Sikhna Jwhwlao**

असद शासन के पतन के बाद सीरिया में अराजकता

संदर्भ

दिसंबर 2024 में बशर अल-असद के शासन के पतन के बाद, सीरिया ने तीन महीने की अस्थिरता का अनुभव किया है।

कौन किससे लड़ रहा है और क्यों?

- **सीरिया के पूर्व राष्ट्रपति बशर अल-असद अलावी समुदाय (एक शिया संप्रदाय) से थे।**
- उनके शासन में अलावी सरकारी पदों पर हावी रहे और उनके शासन के प्रति वफ़ादार रहे।
- **दिसंबर 2024 में असद के पतन के बाद, सत्ता हयात तहरीर अल-शाम (HTS) के हाथों में चली गई, जो अल-कायदा मूल का एक सुन्नी आतंकवादी समूह है।**
- सीरियाई अल्पसंख्यक (अलावी, ईसाई, डूज़) नई कट्टरपंथी सुन्नी सरकार के तहत उत्पीड़न से डरते हैं।
- **प्रादेशिक नियंत्रण**:
    - नई सरकार सीरिया पर पूरी तरह से नियंत्रण नहीं रखती है।
    - असद के वफादार लताकिया (तटीय क्षेत्र) में सक्रिय बने हुए हैं।
    - अमेरिका समर्थित कुर्द सीरियन डेमोक्रेटिक फोर्सेस (SDF) रोजावा (उत्तर-पूर्व सीरिया) में अर्ध-स्वतंत्र रूप से काम करती है।

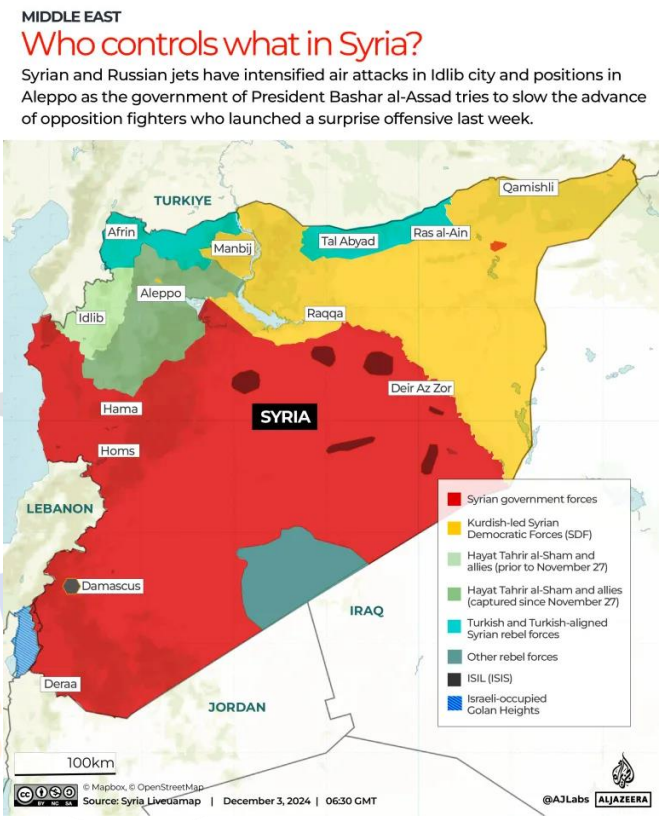

ऐतिहासिक संदर्भ: सीरिया गृहयुद्ध में क्यों उलझा हुआ है?

- **असद का शासन और 2011 अरब स्प्रिंग:**
    - हाफ़िज़ अल-असद ने 1971 से 2000 तक सीरिया पर तानाशाह के रूप में शासन किया।
    - उनके बेटे बशर अल-असद ने 2000 में सत्ता संभाली।
    - 2011 के अरब स्प्रिंग ने असद के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन को जन्म दिया, जो ट्यूनीशिया, मिस्र और लीबिया में हुए विद्रोहों के समान था।
    - आर्थिक कठिनाई, भ्रष्टाचार और बेरोज़गारी के कारण विरोध प्रदर्शन शुरू हुए, लेकिन जल्दी ही गृहयुद्ध में बदल गए।
- **सीरियाई संघर्ष में विदेशी भागीदारी:**
    - अमेरिका, इजरायल और तुर्की ने विभिन्न विद्रोही समूहों का समर्थन किया।
    - रूस और ईरान ने असद और शिया मिलिशिया का समर्थन किया।
    - कुर्दों ने पूर्वोत्तर सीरिया में एक स्वायत्त क्षेत्र की स्थापना की।
    - **इजरायल की भूमिका:** असद के पतन के बाद से, इजरायल ने हवाई हमलों को तेज कर दिया है, यह दावा करते हुए कि वह उन्नत हथियारों को गलत हाथों में पड़ने से रोकना चाहता है।

- **रूस की भूमिका:** रूस लताकिया के हमीमिम में एक प्रमुख सैन्य अड्डा संचालित करता है, जहाँ अल्पसंख्यक नए सिरे से हिंसा के बीच शरण ले रहे हैं।

स्रोत: **The Hindu - Syria**

समाचार में स्थान

यमन - सादा शहर

- **हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका ने यमन में हूती विद्रोहियों पर बड़े पैमाने पर हवाई हमले किये।**
- हमलों का लक्ष्य सना (यमन की राजधानी) और सादा (सऊदी सीमा पर हूती गढ़) था।

- **हूती एक सशस्त्र राजनीतिक और धार्मिक समूह है जो यमन के शिया मुस्लिम अल्पसंख्यक जैदी का प्रतिनिधित्व करता है।**
- **इस समूह की स्थापना 1990 के दशक में हुई थी और इसका नाम इसके दिवंगत संस्थापक हुसैन अल-हूती के नाम पर पड़ा है।**
- हूतियों का यमन की राजधानी सना और देश के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र, जिसमें रणनीतिक लाल सागर तट भी शामिल है, पर नियंत्रण है।
- **यमन की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार दक्षिणी बंदरगाह अदन में स्थित है।**
- **यमन के सीमावर्ती देश:** सऊदी अरब और ओमान

स्रोत: **Indian Express - Yemen**

समाचार संक्षेप में

द्विअपवर्तन (Birefringence)

- **कुछ पदार्थों में एक से ज़्यादा अपवर्तनांक होते हैं, जिसका मतलब है कि प्रकाश अलग-अलग दिशाओं में अलग-अलग तरीके से मुड़ता है। इन पदार्थों को द्विअपवर्तक(birefringent) कहा जाता है।**
- द्विअपवर्तन के परिणामस्वरूप दोहरा अपवर्तन होता है: एक प्रकाश किरण पदार्थ से गुजरते समय दो अलग-अलग किरणों में विभाजित हो जाती है।
- द्विअपवर्तन इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि पदार्थ की क्रिस्टल संरचना अलग-अलग दिशाओं में बदलती रहती है - एक गुण जिसे **अनिसोट्रॉपी** कहा जाता है।
- द्विअपवर्तक पदार्थों में प्रकाश के झुकाव की दिशा निर्धारित करने में ध्रुवीकरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **उदाहरण:** प्राकृतिक (अभ्रक, क्वार्ट्ज), सिंथेटिक (बेरियम बोरेट और लिथियम नियोबेट)।

अपवर्तन और अपवर्तक सूचकांक -

- **जब प्रकाश एक माध्यम से दूसरे माध्यम में जाता है (जैसे, हवा से कांच में), तो अपवर्तन के कारण इसका मार्ग मुड़ जाता है।**
- अपवर्तन इसलिए होता है क्योंकि प्रकाश की गति बदल जाती है क्योंकि यह एक नई सामग्री में प्रवेश करता है।
- अपवर्तनांक (**n**) = निर्वात में प्रकाश की गति/सामग्री में प्रकाश की गति।
  - यह झुकने की सीमा निर्धारित करता है।
- उच्च अपवर्तनांक → प्रकाश का अधिक झुकना।

स्रोत: **The Hindu - Birefringence**

आतंकवाद-विरोध पर 14वीं ADMM-Plus विशेषज्ञ कार्य समूह बैठक

- **आतंकवाद-विरोध पर आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (ADMM-Plus) विशेषज्ञ कार्य समूह (EWG) की 14वीं बैठक 19 से 20 मार्च, 2025 तक नई दिल्ली में आयोजित की जाएगी।**
- **भारत और मलेशिया इस बैठक की सह-अध्यक्षता करेंगे।**

ADMM-Plus और इसके विशेषज्ञ कार्य समूहों (EWG) के बारे में -

- **ADMM-Plus भाग लेने वाले देशों के रक्षा प्रतिष्ठानों के बीच व्यावहारिक सहयोग के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।**
- वर्तमान में यह व्यावहारिक सहयोग के सात प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है:
  - आतंकवाद-रोधी, समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता और आपदा प्रबंधन (एचएडीआर), शांति स्थापना अभियान, सैन्य चिकित्सा, मानवीय खदान कार्रवाई और साइबर सुरक्षा।
- सहयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए इनमें से प्रत्येक क्षेत्र के लिए **EWG** (विशेषज्ञ कार्य समूह) स्थापित किए गए हैं।
- **प्रतिभागी:**
  - **आसियान सदस्य:** ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओ पीडीआर, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, वियतनाम, सिंगापुर और थाईलैंड।
  - **संवाद साझेदार:** भारत, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया, जापान, चीन, अमेरिका और रूस।
  - **अन्य प्रतिभागी:** तिमोर लेस्ते और आसियान सचिवालय

EWG सह-अध्यक्षों की भूमिका

- **प्रत्येक EWG की सह-अध्यक्षता एक आसियान सदस्य और एक संवाद साझेदार द्वारा तीन वर्ष के चक्र के लिए की जाती है।**
- **सह-अध्यक्षों की जिम्मेदारियों में निम्नलिखित शामिल हैं:**
    - तीन-वर्षीय चक्र के लिए उद्देश्य, नीतिगत दिशानिर्देश और रणनीतिक दिशा-निर्देश निर्धारित करना।
    - नियमित बैठकें आयोजित करना (प्रति वर्ष कम से कम दो)
    - व्यावहारिक सहयोग में प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए तीसरे वर्ष में एक अभ्यास (टेबल-टॉप/फील्ड प्रशिक्षण/स्टाफ/संचार, आदि) का आयोजन करना।

स्रोत: **PIB - ADMM Plus EWG**

उत्तर पूर्व प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं पहुंच केंद्र (NECTAR)

- केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने शिलांग में NECTAR के स्थायी परिसर की आधारशिला रखी।

NECTAR के बारे में -

- **यह भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत स्थापित एक स्वायत्त सोसायटी है। (मुख्यालय - शिलांग, मेघालय)**
- इसकी **स्थापना 2012 में** दो मिशनों, अर्थात् राष्ट्रीय बांस अनुप्रयोग मिशन (एनएमबीए) और भूस्थानिक अनुप्रयोग मिशन (एमजीए) को मिलाकर की गई थी।
- **NECTAR की प्रमुख पहल:**
    - **मिशन सैफरन पहल: पूर्वोत्तर भारत में केसर की खेती का विस्तार** करने के लिए **2021 में शुरू** की गई।
        - **वर्तमान खेती के क्षेत्र:** मेंचुखा (अरुणाचल प्रदेश) और युकसोम (सिक्किम)।
        - **आगामी विस्तार:** नागालैंड और मणिपुर
    - **बांस और शहद उत्पादन में प्रगति:** सतत कृषि और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।

केसर के बारे में -

- **केसर एक अत्यधिक मूल्यवान मसाला है जो क्रोकस सैटाइवस फूल के स्टिग्मा से प्राप्त होता है।**
- इसकी ऊंची कीमत और श्रम-गहन कटाई प्रक्रिया के कारण इसे अक्सर **"लाल सोना"** कहा जाता है।
- केसर का उपयोग मुख्यतः **पाककला, औषधीय और सौंदर्य प्रसाधनों में किया जाता है।**
- **प्रमुख केसर उत्पादक देशों में शामिल हैं:**
    - **ईरान** - सबसे बड़ा उत्पादक (**वैश्विक उत्पादन का 90% से अधिक**)।
    - **भारत (कश्मीर)** - **उच्च गुणवत्ता वाले केसर के लिए जाना जाता है**, विशेष रूप से पंपोर, जम्मू और कश्मीर से।
    - **स्पेन** - यहाँ स्पेनिश केसर का उत्पादन होता है, जो अपने हल्के स्वाद के लिए प्रसिद्ध है।
    - **ग्रीस, अफगानिस्तान, मोरक्को** – अन्य प्रमुख उत्पादक।

स्रोत: **PIB - NECTAR**

संपादकीय सारांश

सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा

संदर्भ

संयुक्त राज्य अमेरिका के विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) से हटने तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए संयुक्त राज्य एजेंसी (USAID) का आकार काफी कम करने के निर्णय से सहायता और सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में बड़ी बाधा उत्पन्न हो गई है।

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य -

- **भारतीय संविधान का अनुच्छेद 47 राज्य को सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल में सुधार करने की जिम्मेदारी सौंपता है।**
- सार्वजनिक स्वास्थ्य को स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशिष्ट ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है।
- कोविड-19 महामारी ने समर्पित सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यबल की तत्काल आवश्यकता को उजागर किया है।
- ऐसा कार्यबल सरकारी प्रणालियों, नागरिक समाज संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और अनुसंधान निकायों के लिए आवश्यक है।

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा और नौकरियों का विकास -

- **औपनिवेशिक युग की जड़ें:** सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा औपनिवेशिक युग के दौरान शुरू हुई, जो चिकित्सा शिक्षण के भीतर अंतर्निहित थी।
    - सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण को औपचारिक रूप देने के लिए **1932 में अखिल भारतीय स्वच्छता एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान, कोलकाता की स्थापना** की गई थी।
    - निवारक और सामाजिक चिकित्सा, जिसे बाद में **सामुदायिक चिकित्सा** कहा गया, चिकित्सा शिक्षा का हिस्सा बन गई।
    - हालाँकि, सामुदायिक चिकित्सा में विशेषज्ञ कम थे और उनका ध्यान मुख्य रूप से चिकित्सा शिक्षण पर था।
- **मांग और विस्तार में वृद्धि:** 2000 के दशक की शुरुआत में, सार्वजनिक स्वास्थ्य की डिग्री हासिल करने वाले अधिकांश छात्र ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय संघ, यूके और अमेरिका जैसे देशों में चले गए।
    - बढ़ती आवश्यकता को समझते हुए भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों और शिक्षण का विस्तार किया गया।
    - **वर्ष 2000 में, केवल एक संस्थान MPH(सार्वजनिक स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर) पाठ्यक्रम प्रदान करता था; वर्तमान में, 100 से अधिक संस्थान सार्वजनिक स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।**
    - **2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) के शुभारंभ के साथ हुआ, जिसने गैर-चिकित्सा विशेषज्ञों के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य भूमिकाएं खोल दीं।**
- **आपूर्ति और मांग के बीच बेमेल:** सरकारी भर्ती में प्रारंभिक वृद्धि के बाद, नियुक्तियां स्थिर हो गईं, जबकि संस्थानों और स्नातकों की संख्या में वृद्धि जारी रही।
    - **MPH** स्नातकों के लिए नौकरी पाना कठिन होता जा रहा है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा और रोजगार में चुनौतियाँ -

- **आपूर्ति और मांग के बीच बेमेल:** प्रवेश स्तर की नौकरियां (जैसे, अनुसंधान या कार्यक्रम सहायक) उच्च प्रतिस्पर्धा को आकर्षित करती हैं।
    - पदों की सीमित उपलब्धता के कारण नौकरी पाने की सफलता दर कम है।

    - सार्वजनिक स्वास्थ्य भूमिकाओं और संस्थानों के सिकुड़ने से रोजगार के अवसर और भी सीमित हो जाते हैं।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य कैडर स्थापित करने में चुनौतियाँ:** राज्यों में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रबंधन कैडर बनाने के प्रयासों को नौकरशाही बाधाओं और नीतिगत मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
- **निजी क्षेत्र के प्रभुत्व का प्रभाव:** निजी क्षेत्र की स्वास्थ्य देखभाल अस्पताल और व्यवसाय प्रबंधन पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य स्नातकों के लिए अवसर सीमित हो जाते हैं।
    - अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र मुख्य नियोक्ता बने हुए हैं, लेकिन वे विदेशी अनुदान पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
    - भारत अब अंतर्राष्ट्रीय वित्तपोषकों के लिए प्राथमिकता नहीं रह गया है, जिससे रोजगार के अवसर और कम हो रहे हैं।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा की खराब गुणवत्ता**
    - **मानकीकरण का अभाव:** कोई भी एकल नियामक निकाय एमपीएच प्रशिक्षण की देखरेख नहीं करता है।
    - **अपर्याप्त व्यावहारिक शिक्षा:** प्रशिक्षण में वास्तविक दुनिया के अनुभव का अभाव होता है।
- **अनियमित संस्थान:** संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन कई छात्र आकर्षित करने के लिए गुणवत्ता से समझौता कर रहे हैं।
    - संकाय सदस्यों में प्रायः व्यावहारिक अनुभव का अभाव होता है।
    - छात्र प्रायः क्षेत्र की स्पष्ट समझ के बिना ही नामांकन करा लेते हैं।
- **असमान क्षेत्रीय वितरण: असम**, **बिहार** और **झारखंड** जैसे बड़े राज्यों में सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान बहुत कम हैं।
    - पहाड़ी एवं छोटे राज्यों को भी प्रशिक्षण सुविधाओं में इसी प्रकार की कमी का सामना करना पड़ता है।
- **नियामक अंतराल:** एमपीएच पाठ्यक्रम राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा विनियमित नहीं हैं।
    - मानकीकृत पाठ्यक्रम और परिणाम माप की कमी से समग्र स्नातक गुणवत्ता कम हो जाती है।

अनुशंसाएँ और दृष्टिकोण -

- **अधिक सार्वजनिक स्वास्थ्य नौकरियां सृजित करना:** अधिकांश विकसित देशों में सरकारें सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवरों की सबसे बड़ी नियोक्ता हैं।
    - भारत को रोजगार के अवसर बढ़ाने और सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर एक समर्पित सार्वजनिक स्वास्थ्य कैडर स्थापित करना चाहिए।
- **मजबूत विनियामक तंत्र लागू करना:** एनएमसी या यूजीसी के भीतर एक समर्पित सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा प्रभाग बनाया जाना चाहिए।
    - प्रभाग को नवाचार की अनुमति देते हुए पाठ्यक्रम मानक और न्यूनतम प्रशिक्षण आवश्यकताएं निर्धारित करनी चाहिए।
- **व्यावहारिक शिक्षण और प्रशिक्षण में सुधार:** सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण को वास्तविक विश्व स्वास्थ्य प्रणालियों के साथ एकीकृत करना।
    - सीमित प्रशिक्षण सुविधाओं वाले राज्यों को नये सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **सतत वित्तपोषण के लिए राष्ट्रीय पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण:** विदेशी सहायता में कमी के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान और विकास के लिए घरेलू वित्तपोषण में वृद्धि आवश्यक हो गई है।
    - अनुसंधान और कार्यक्रम कार्यान्वयन को समर्थन देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वित्त पोषण की स्थापना करना।

स्रोत: **The Hindu: The challenges of public health education in India**

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य

संदर्भ

भारत लंबे समय से विश्व स्वास्थ्य संगठन के सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC) ढांचे के तहत 'सभी के लिए स्वास्थ्य' के लिए प्रतिबद्ध है, जो प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (PHC) को प्राथमिकता देता है और जेब से होने वाले खर्च (OOPE) को कम करता है।

हाल के वर्षों में सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल में भारत द्वारा की गई उल्लेखनीय प्रगति -

- **आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना(AB-PMJAY): 2018 में शुरू** की गई, **AB-PMJAY** दुनिया की सबसे बड़ी सरकारी वित्त पोषित स्वास्थ्य बीमा योजना है, जो **द्वितीयक और तृतीयक देखभाल के लिए प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख रुपये तक का कवरेज प्रदान करती है।**
    - 36 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड जारी किए जा चुके हैं और 31,000 से अधिक अस्पतालों को इस योजना के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है।
- **स्वास्थ्य अवसंरचना का विस्तार: आयुष्मान भारत स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र (AB-HWC) पहल** के अंतर्गत, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, गैर-संचारी रोग जांच और बुनियादी नैदानिक सेवाओं सहित व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करने के लिए **1.5 लाख से अधिक HWC स्थापित किए गए हैं।**
- **कोविड-19 प्रतिक्रिया और टीकाकरण अभियान: भारत ने दुनिया का सबसे बड़ा कोविड-19 टीकाकरण अभियान** चलाया, जिसमें **2.2 बिलियन से अधिक वैक्सीन खुराकें लगाई गईं**।
    - **कोवैक्सीन** और **कोविशील्ड** जैसे स्वदेशी टीकों के विकास और उनके तेजी से वितरण ने बड़े पैमाने पर सार्वजनिक स्वास्थ्य जुटाने की भारत की क्षमता को प्रदर्शित किया।
- **राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (एनडीएचएम): 2020 में लॉन्च** किए गए एनडीएचएम का उद्देश्य एक एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है।
    - 47 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाते (ABHA) बनाए गए हैं, जिससे व्यक्ति अपने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को डिजिटल रूप से संग्रहीत और साझा कर सकते हैं।
- **संचारी रोगों में कमी: राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM)** के अंतर्गत ठोस प्रयासों से संचारी रोगों में कमी आई है।
    - भारत को **2014** में **पोलियो मुक्त** घोषित किया गया था और **राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम** के तहत क्षयरोग (टीबी) के मामलों को कम करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसका लक्ष्य **2025** तक टीबी को समाप्त करना है।
- **स्वास्थ्य के लिए बजट आवंटन में वृद्धि: 2025** के लिए स्वास्थ्य बजट **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग** के लिए **₹95,957.87 करोड़** और **स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग** के लिए **₹3,900.69 करोड़** है।
    - यह AB-PMJAY के लिए **₹**2,000 करोड़ की वृद्धि दर्शाता है**,** जो स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचे और सेवाओं को मजबूत करने पर सरकार के फोकस को दर्शाता है।

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े मुद्दे -

- **स्वास्थ्य देखभाल तक असमान पहुंच:** अनौपचारिक क्षेत्र और ग्रामीण आबादी को स्वास्थ्य देखभाल में बाधाओं का सामना करना पड़ता है:
    - ग्रामीण क्षेत्रों में खराब स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा
    - बीमा साक्षरता का अभाव और बिचौलियों पर निर्भरता।
- **कमजोर माध्यमिक और तृतीयक सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा:** सार्वजनिक क्षेत्र में मजबूत माध्यमिक और तृतीयक देखभाल सुविधाओं का अभाव है, जिसके कारण मरीज महंगे निजी अस्पतालों की ओर रुख करते हैं।
    - इससे जेब से होने वाला खर्च (OOPE) बढ़ जाता है और किफायती स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच सीमित हो जाती है।

- **उपचारात्मक देखभाल पर अत्यधिक जोर:** उपचारात्मक देखभाल पर ध्यान, विशेष रूप से पीएमजेएवाई जैसी बीमा योजनाओं के माध्यम से, निवारक और समुदाय-आधारित स्वास्थ्य सेवाओं से ध्यान हटा दिया है, जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य देखभाल लागत को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **कुशल कार्यबल की कमी:** भारत में डॉक्टरों, नर्सों और संबद्ध कर्मचारियों की भारी कमी है। स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ दुर्व्यवहार, जिससे गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में बाधा उत्पन्न होती है।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य निवेश में गिरावट: राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM)** जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए बजटीय आवंटन में लगातार गिरावट आई है।
    - चिकित्सा अवसंरचना और डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार पर ध्यान प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य देखभाल को मजबूत करने की कीमत पर दिया गया है।
- **पुराना डेटा:** पुराना जनसांख्यिकीय डेटा प्रभावी नीति नियोजन को सीमित करता है।
    - **उदाहरणार्थ**, **अंतिम जनगणना 2011 में** की गई थी।

वैश्विक प्रथाएँ -

नकारात्मक उदाहरण

- **संयुक्त राज्य अमेरिका:**
    - बीमा-संचालित प्रणाली के कारण:
        - उच्च स्वास्थ्य देखभाल लागत
        - बढ़ती असमानताएँ
        - बीमा रहित व्यक्तियों के लिए सीमित पहुंच
    - दावे अस्वीकार किये जाने पर जनता का आक्रोश

सकारात्मक उदाहरण

- **थाईलैंड:**
    - कर-वित्तपोषित सार्वभौमिक कवरेज योजना
    - मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य निवेश
    - विनियमित निजी बीमा
    - प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और समुदाय आधारित सेवाओं पर ध्यान केन्द्रित करना
- **कोस्टा रिका:**
    - अनिवार्य बीमा योजना (काजा कोस्टारिकेंस डी सेगुरो सोशल)
    - सामान्य कर राजस्व वित्तपोषण
    - प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे पर जोर

भारत की स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने के लिए सिफारिशें -

- **प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल को मजबूत करना:** द्वितीयक और तृतीयक देखभाल पर बोझ को कम करने के लिए निवारक और समुदाय-आधारित स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश करना।
    - इसमें सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी) और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों (सीएचसी) को पुनर्जीवित करना शामिल है।
- **सार्वजनिक क्षेत्र में निवेश में वृद्धि:** सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा अवसंरचना, विशेष रूप से माध्यमिक और तृतीयक स्वास्थ्य सेवा के लिए वित्त पोषण में वृद्धि, ताकि निजी अस्पतालों पर निर्भरता कम हो और OOPE कम हो।
- **निजी क्षेत्र को विनियमित करना:** बढ़ी हुई लागत को रोकने और गुणवत्तापूर्ण देखभाल तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं पर सख्त विनियमन लागू करना।
- **सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का विस्तार करना:** व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य लाभ पैकेज विकसित करें जो अनौपचारिक श्रमिकों और कमजोर आबादी को कवर करें, तथा यह सुनिश्चित करें कि उन्हें स्वास्थ्य संबंधी खर्चों के विरुद्ध वित्तीय सुरक्षा मिले।
- **डिजिटल स्वास्थ्य को बढ़ावा देना**: टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड जैसी पहलों के माध्यम से, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, स्वास्थ्य सेवा की पहुंच में सुधार के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाना।

- **कार्यबल की कमी को दूर करना:** कार्यबल की कमी को दूर करने के लिए चिकित्सा शिक्षा के अवसरों में वृद्धि करें और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों को वंचित क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि:** स्वास्थ्य व्यय को सकल घरेलू उत्पाद के कम से कम **2.5% तक बढ़ाएं** (राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के अनुसार)।
- **सफल वैश्विक मॉडलों से सीखना:** कर-वित्तपोषित सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के थाईलैंड के मॉडल को अपनाना।
    - कोस्टा रिका के अनिवार्य बीमा के दृष्टिकोण को राज्य नियंत्रण के साथ एकीकृत करना।
    - निजी स्वास्थ्य देखभाल के सरकारी विनियमन को मजबूत करना (कनाडा और यूके के समान)।

स्रोत: **The Hindu: From insurance-driven private health care to equity**

पोषण की समस्या से निपटना

संदर्भ

हालाँकि बजट 2025 में स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं दी गई, लेकिन **सक्षम आंगनवाड़ी** और **पोषण 2.0** के लिए बढ़ा हुआ आवंटन आने वाले वित्तीय वर्ष में पोषण पर ज़्यादा ध्यान देने का संकेत देता है। हालाँकि, यह अनिश्चित है कि क्या यह भारत की पोषण चुनौती को प्रभावी ढंग से संबोधित करेगा।

भारत में पोषण से जुड़ी चुनौतियाँ -

- **संकीर्ण नीतिगत फोकस:** पोषण नीति मुख्य रूप से महिलाओं और बच्चों में कुपोषण को लक्षित करती है, तथा पुरुषों, वरिष्ठ नागरिकों और गैर-प्रजनन आयु वाली महिलाओं जैसे अन्य समूहों की उपेक्षा करती है।
    - जीवनशैली से प्रेरित गैर-संचारी रोग (NCD) जैसे मधुमेह और उच्च रक्तचाप को पोषण कार्यक्रमों के तहत पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं किया जाता है।
- **उच्च कुपोषण दर:**
    - **पांच वर्ष से कम आयु के 36% बच्चे** अविकसित(stunted) हैं।
    - केवल **11% बच्चों (6-23 महीने) को** पर्याप्त आहार मिल पाता है।
    - **57% महिलाएँ (15-49 वर्ष)** एनीमिया से पीड़ित हैं।
- **बढ़ती जीवनशैली से प्रेरित गैर-संचारी रोग:**
    - **24% महिलाएं** और **23% पुरुष** अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हैं।
    - **14% जनसंख्या** मधुमेह की दवा लेती है।
- **मौजूदा योजनाओं की सीमित पहुंच:** पोषण 2.0 और सक्षम आंगनवाड़ी मुख्य रूप से घर ले जाने वाले राशन और पूरक भोजन पर केंद्रित हैं।
    - वे आकांक्षी जिलों और पूर्वोत्तर क्षेत्र को लक्ष्य बनाते हैं, जिससे यह धारणा मजबूत होती है कि कुपोषण एक क्षेत्रीय मुद्दा है।
- **अपर्याप्त प्राथमिक स्वास्थ्य अवसंरचना:** स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्र (**HWC**) असमान रूप से वितरित हैं, कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में इनका कवरेज अधिक है।
    - स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों में पोषण सेवाएं असंगत हैं तथा उनका क्रियान्वयन खराब है।
- **समर्पित पोषण स्टाफ का अभाव:** स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों में पोषण सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित स्टाफ का अभाव है।
    - पोषण बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियों का केवल एक छोटा सा हिस्सा है।

भारत में पोषण को मजबूत करने के तरीके -

- **पोषण नीति का दायरा बढ़ाना:** महिलाओं और बच्चों के अलावा पुरुषों, वरिष्ठ नागरिकों और जीवनशैली से प्रेरित बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों पर भी ध्यान केंद्रित करना।
    - कुपोषण (खाद्य असुरक्षा के कारण) और खराब पोषण (अस्वास्थ्यकर आहार के कारण) दोनों से निपटना।
- **स्वास्थ्य एवं आरोग्य केन्द्रों (HWC) को मजबूत करना: HWC** की संख्या में वृद्धि करना, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में।
    - समाज के सभी वर्गों को व्यापक पोषण सेवाएं प्रदान करने के लिए स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों को सुसज्जित करना।
    - यह सुनिश्चित करना कि स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं, बच्चों, बुजुर्गों और बीमारी या आघात से उबरने वाले लोगों के लिए निरंतर पोषण संबंधी सलाह प्रदान करें।
- **स्थानीय संसाधनों और संस्थाओं को शामिल करना:** पूरक पोषण कार्यक्रमों में स्थानीय रूप से उपलब्ध, पोषक तत्वों से भरपूर उपज का उपयोग करना।

  - बेहतर सामुदायिक स्वीकृति के लिए कम लागत वाले, सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य खाद्य विकल्पों को प्रोत्साहित करना।
- **समर्पित पोषण कार्यबल:** स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों में विशेष पोषण कार्यकर्ताओं की नियुक्ति करना।
  - कर्मचारियों को अनुकूलित पोषण संबंधी सलाह प्रदान करने तथा परिणामों की निगरानी करने के लिए प्रशिक्षित करना।
- **सामुदायिक सहभागिता और स्थानीय स्वामित्व:** पोषण अभियानों में स्थानीय अभिजात वर्ग और सामुदायिक नेताओं को शामिल करना।
  - स्वीकृति और अनुपालन में सुधार के लिए पोषण प्रथाओं को स्थानीय व्यंजनों के साथ जोड़ना।
  - आधुनिक पोषण सलाह के साथ-साथ पारंपरिक आहार संबंधी आदतों को बढ़ावा देना।
- **पोषण कार्यक्रमों का विस्तार एवं विविधता लाना:** मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी जीवनशैली संबंधी बीमारियों के लिए लक्षित पोषण कार्यक्रम विकसित करना।
  - स्कूल-आधारित पोषण शिक्षा प्रदान करें और मध्याह्न भोजन कार्यक्रमों का विस्तार करना।

स्रोत: **The Hindu: Tackling the problem of nutrition**

फाइव आइज़ में दरार

संदर्भ

फाइव आईज़ एलायंस अब अभूतपूर्व आंतरिक संकट का सामना कर रहा है।

फाइव आईज एलायंस की पृष्ठभूमि और गठन -

- **द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गठन:**
  - फाइव आईज गठबंधन की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, **अमेरिका** और **ब्रिटेन के बीच**, दुश्मन के संचार को बाधित करने और उसे डिकोड करने के लिए की गई थी।
  - अमेरिका और ब्रिटेन के बीच खुफिया जानकारी साझा करने के समझौते को **1946 में औपचारिक रूप दिया गया था।**
- **सदस्यता का विस्तार:**
  - **कनाडा 1948 में** तथा **ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड 1956 में इसमें शामिल हुए**।
  - **यह गठबंधन एंग्लोस्फीयर (साझा राजनीतिक, कानूनी और सांस्कृतिक परंपराओं वाले अंग्रेजी भाषी राष्ट्र) के बीच साझा हित के सिग्नल इंटेलिजेंस (SIGINT) पर केंद्रित था।**
- **शीत युद्ध और 9/11 के बाद की भूमिका:**
  - शीत युद्ध के दौरान, गठबंधन ने सोवियत और वारसॉ संधि संचार पर नज़र रखी।
  - 9/11 के बाद, इसका विस्तार आतंकवाद-रोधी और साइबर सुरक्षा को भी कवर करने के लिए किया गया।
  - हाल ही में, इसने चीन पर ध्यान केंद्रित किया, तथा 5G नेटवर्क में हुआवेई से होने वाले खतरों के प्रति चेतावनी दी (2018)।
  - पश्चिमी और गैर-पश्चिमी दोनों देशों को बुनियादी ढांचे से हुआवेई को बाहर करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

फाइव आईज में बढ़ता राजनीतिक संकट -

- **ट्रम्प की विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तन:** डोनाल्ड ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में, अमेरिकी विदेश नीति में नाटकीय परिवर्तन आया है:
  - रूस के साथ मेल-मिलाप की मांग।
  - यूक्रेन में युद्ध विराम के लिए दबाव बनाना।
  - यूरोपीय संघ और नाटो को कमजोर करना।
  - युद्धोत्तर अमेरिका-यूरोप रणनीतिक आम सहमति को खत्म करना।
  - इन कदमों से वाशिंगटन के यूरोपीय सहयोगियों और व्यापक पश्चिमी गठबंधन के साथ संबंध तनावपूर्ण हो गए हैं।
- **कनाडा के साथ विवाद**: ऐसी रिपोर्टें सामने आईं कि ट्रम्प के सहयोगी व्यापार और सीमा तनाव के कारण कनाडा को फ़ाइव आइज़ से बाहर करने पर विचार कर रहे थे। व्हाइट हाउस ने इन रिपोर्टों का खंडन किया।
  - ट्रम्प ने अपने प्रमुख व्यापारिक साझेदार कनाडा के विरुद्ध आक्रामक व्यापार युद्ध छेड़ दिया।
  - अमेरिका का "51वां राज्य" बनना चाहिए।
  - दावा किया गया कि अमेरिका-कनाडा सीमा मनमानी है।
- **प्रादेशिक विवाद:** ट्रम्प ने **ग्रीनलैंड** (डेनमार्क का एक क्षेत्र) को अपने में मिलाने का प्रस्ताव रखा - जिसे एंग्लो-अमेरिकी सहयोगियों के लिए प्रत्यक्ष चुनौती के रूप में देखा गया।
- **ब्रिटेन के साथ तनाव:** एक रूढ़िवादी सभा में, अमेरिकी सीनेटर जेडी वेंस ने ब्रिटेन को परमाणु हथियार रखने वाला "पहला इस्लामवादी देश" बताया, और इसकी तुलना ईरान और पाकिस्तान से की।
  - ट्रम्प का "अमेरिका को फिर से महान बनाओ (एमएजीए)" आंदोलन ब्रिटेन को एक असफल राज्य के रूप में देखता है, जिस पर अत्यधिक विनियमन और उदार राजनीति हावी है।

- अमेरिकी दक्षिणपंथी, यूरोपीय और एंग्लोस्फीयर अभिजात वर्ग सहित वैश्विक उदारवादी प्रतिष्ठान से नाराज है।

फाइव आईज संकट के बीच भारत के लिए अवसर -

- **उन्नत खुफिया सहयोग:** फाइव आईज के भीतर बढ़ती अस्थिरता के साथ, भारत स्वयं को एक विश्वसनीय खुफिया साझेदार के रूप में स्थापित कर सकता है।
    - आतंकवाद-निरोध, साइबर सुरक्षा और क्षेत्रीय खुफिया जानकारी (विशेषकर चीन और पाकिस्तान के संबंध में) में भारत का अनुभव इसे एक मूल्यवान सहयोगी बनाता है।
    - भारत द्विपक्षीय या बहुपक्षीय आधार पर फाइव आईज़ सदस्यों के साथ खुफिया जानकारी साझा करने के समझौते पर बातचीत कर सकता है।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारियां:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर फाइव आईज का बढ़ता फोकस भारत के रणनीतिक हितों (जैसे, क्वाड और ऑकस) के अनुरूप है।
    - चीन के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए भारत अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ रक्षा और खुफिया संबंधों को गहरा कर सकता है।
    - नौसैनिक सहयोग और संयुक्त अभ्यास (जैसे मालाबार) का विस्तार क्षेत्र में भारत की स्थिति को मजबूत कर सकता है।
- **सैन्य-औद्योगिक सहयोग:** भारत फाइव आईज देशों के साथ गहन रक्षा सहयोग की संभावनाएं तलाश सकता है, विशेष रूप से उन्नत प्रौद्योगिकी (जैसे, ड्रोन, साइबर सुरक्षा, एआई) में।
    - भारत का रक्षा उद्योग, विशेष रूप से नौसेना और एयरोस्पेस क्षेत्रों में, फाइव आईज़ सदस्यों के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और संयुक्त उद्यमों से लाभान्वित हो सकता है।
- **कूटनीतिक लाभ:** पश्चिमी और गैर-पश्चिमी दोनों देशों के साथ भारत के संतुलित संबंध इसे फाइव आइज़ और ग्लोबल साउथ के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित करते हैं।
    - भारत की स्वतंत्र विदेश नीति और गुटनिरपेक्ष रुख उसे पश्चिमी और पूर्वी शक्तियों के बीच मध्यस्थता करने की अनुमति देता है।
- **साइबर सुरक्षा और प्रौद्योगिकी साझाकरण:** भारत साइबर सुरक्षा और डिजिटल अवसंरचना संरक्षण पर फाइव आईज के साथ संयुक्त पहल का प्रस्ताव कर सकता है।
    - आईटी और डिजिटल अवसंरचना में भारत की बढ़ती विशेषज्ञता उसे वैश्विक संचार नेटवर्क को सुरक्षित करने में प्रमुख साझेदार बना सकती है।

स्रोत: **Indian Express: The Five Eyes Fracture**

द्विपक्षीय निवेश संधि का संशोधन

संदर्भ

केंद्रीय बजट 2025 में मॉडल द्विपक्षीय निवेश संधि (**BIT**) के टेक्स्ट को संशोधित करने की घोषणा की गई ताकि इसे अधिक निवेशक-अनुकूल बनाया जा सके।

समाचार के बारें में और अधिक जानकारी -

- मॉडल BIT का अंतिम संशोधन 2015 में किया गया था, जिसका उद्देश्य निवेशकों के अधिकारों और दायित्वों में संतुलन स्थापित करना था।
- संशोधित BIT का उद्देश्य वर्तमान आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करना और विदेशी निवेश के लिए अनुकूल वातावरण बनाना है।

BIT का उद्देश्य और भूमिका -

- **BIT, जिसे अंतर्राष्ट्रीय निवेश समझौते (IIA) भी कहा जाता है, कानूनी रूप से बाध्यकारी संधियाँ हैं जो प्रतिकूल सरकारी कार्रवाइयों से विदेशी निवेशों की रक्षा करती हैं।**
- BIT दो विवाद निपटान तंत्रों के माध्यम से निवेशकों को अधिकार प्रदान करते हैं:
  - **निवेशक-राज्य विवाद निपटान (ISDS)**: निवेशकों को मेजबान राज्य के विरुद्ध दावा लाने की अनुमति देता है।
  - **राज्य-राज्य विवाद निपटान**: गृह राज्यों को मेजबान राज्य के विरुद्ध विवाद उठाने की अनुमति देता है।
- BIT सुरक्षा का आश्वासन देकर विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करते हैं, लेकिन विदेशी निवेशकों से निवेश की गारंटी नहीं देते हैं।

BIT का वैश्विक परिदृश्य -

- **UNCTAD के** आंकड़ों के अनुसार:
  - कुल **3,291 आईआईए (2,831 BIT** सहित) पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
  - वर्तमान में कई BIT पर बातचीत चल रही है।
- देश नियमित रूप से अपने मॉडल BIT टेक्स्ट को संशोधित करते हैं:
  - **अमेरिका ने 1994** में एक मॉडल BIT विकसित किया और **1998, 2004 और 2012 में इसे संशोधित किया**।

BIT का ऐतिहासिक विकास -

- **प्रारंभिक चरण (20वीं शताब्दी के मध्य):** प्रारंभिक BIT पर विकसित पूंजी-निर्यातक और विकासशील पूंजी-आयात करने वाले देशों के बीच हस्ताक्षर किए गए थे।
  - प्रारंभिक BIT को दो प्रमुख कारकों ने प्रभावित किया:
    - उपनिवेशवाद का उन्मूलन और आर्थिक राष्ट्रवाद में वृद्धि - इसका उद्देश्य विदेशी स्वामित्व वाली निजी संपत्ति की रक्षा करना है।
    - 1950 और 1960 के दशक में एफडीआई प्रवृत्तियां संसाधन निष्कर्षण और आयात-प्रतिस्थापन विनिर्माण पर केंद्रित थीं, जिसके लिए न्यूनतम निवेश संरक्षण मानकों की आवश्यकता थी।
- **BIT का विस्तार:** पहले BIT में ISDS (निवेशक-राज्य विवाद निपटान) शामिल नहीं था।
  - **नाफ्टा (1990 के दशक)** में निम्नलिखित को प्रस्तुत किया गया:
    - **स्थापना-पूर्व प्रतिबद्धताएँ**: निवेश की स्थापना और संचालन के दौरान उदारीकृत विदेशी निवेश व्यवस्था।

- इससे BIT विशुद्ध संरक्षण से संरक्षण और उदारीकरण के संयोजन में परिवर्तित हो गया।

BIT में भारत की हालिया प्रगति -

- **EFTA मुक्त व्यापार समझौता (FTA) - मार्च 2024: भारत ने** मार्च 2024 में **यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (EFTA)** के साथ एक एफटीए पर हस्ताक्षर किए।
  - एफटीए के निवेश अध्याय में प्रमुख नवाचार:
    - **मात्रात्मक प्रतिबद्धता** - भारत के लिए पहली बार।
    - **विवाद निपटान** तंत्र मध्यस्थता से **सरकार-से-सरकार (G-to-G) परामर्श में स्थानांतरित हो गया**।
- **BIT में भारत की बदलती भूमिका:** भारत एक पूंजी आयातक देश से एक महत्वपूर्ण **पूंजी निर्यातक** देश के रूप में परिवर्तित हो गया है:
  - आवक एफडीआई 2000 में 16 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2023 में 537 बिलियन डॉलर हो गई।
  - जावक एफडीआई 2000 में 1.7 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2023 में 236 बिलियन डॉलर हो गई।
  - भारत को अब अपडेटेड BIT के माध्यम से अपने निवेशकों के हितों को सुरक्षित करने की आवश्यकता है।

प्रमुख मुद्दे और रणनीतिक प्रश्न -

- **एकल बनाम बहु मॉडल BIT टेक्स्ट**: पूंजी आयातक और पूंजी निर्यातक देश के रूप में भारत की दोहरी स्थिति से यह प्रश्न उठता है:
  - क्या भारत को सभी साझेदारों के लिए एक ही मॉडल टेक्स्ट रखना चाहिए या साझेदार देश की प्रकृति के आधार पर BIT को तैयार करना चाहिए?
- **सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र (MFN) खंड:** MFN खंड की उत्पत्ति बहुपक्षीय व्यापार समझौतों में हुई थी और इसे BIT में अनुकूलित किया गया।
  - MFN यह सुनिश्चित करता है कि विदेशी निवेशकों को सर्वाधिक पसंदीदा संधि साझेदार के समान ही व्यवहार मिले।
  - भारत के 2015 मॉडल BIT में निम्नलिखित संभावित मुद्दों के कारण MFN खंड को बाहर रखा गया:
    - **संधि खरीदारी**: विभिन्न समझौतों से सर्वाधिक अनुकूल शर्तों का लाभ उठाना।
    - सावधानीपूर्वक बातचीत करके किए गए द्विपक्षीय समझौतों में व्यवधान उत्पन्न करना।
  - MFN के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण:
    - **परामर्शदात्री MFN**
    - **दूरदर्शी प्रावधान**
    - **संधि खरीदारी को रोकने के लिए जाँच**

भारत के लिए रणनीतिक अवसर -

- एक दशक के बाद मॉडल BIT को संशोधित करने का निर्णय भारत को यह अवसर प्रदान करता है:
  - यह पूंजी आयातक और निर्यातक दोनों के रूप में अपनी नई भूमिका को प्रतिबिंबित करेगा।
  - अलग-अलग साझेदार देशों के अनुरूप BIT के प्रति अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण विकसित करना।
  - निवेश संरक्षण और उदारीकरण के लिए नवीन तंत्र लागू करना।
  - अमृत काल के दौरान वैश्विक निवेश परिदृश्य में एक प्रमुख कर्ता के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत करना।

स्रोत: **Indian Express: Thinking a BIT Differently**